# रक्षा बजट में अप्रत्याशित इजाफा

**जाहिर है, 5.5 फीसदी जीडीपी ग्रोथ के बरक्स रक्षा खर्च में 7.1 फीसदी की बढ़ोतरी को चीन सरकार की प्राथमिकताओं का स्पष्ट संकेत माना जा सकता है। यह बढ़ोतरी ऐसे समय आई है जब चीनी सेना के आधुनिकीकरण का कार्यक्रम पहले ही जोर-शोर से जारी है।**

सुमन वर्मा।।

ऐसे में जब रूस और यूक्रेन के बीच की जंग पूरी दुनिया के लिए चिंता की वजह बनी हुई है, चीन के रक्षा बजट में अप्रत्याशित बढ़ोतरी ने स्वाभाविक ही सबका ध्यान खींचा है। शनिवार को चीनी वित्त मंत्रालय ने देश में रक्षा पर होने वाले खर्च में 7.1 फीसदी वृद्धि का एलान किया जिसका मतलब यह है कि साल 2022 में चीन में रक्षा मद में 230.16 अरब डॉलर खर्च किया जाएगा। 2022–23 के दौरान भारत में रक्षा पर होने वाले खर्च के मुकाबले यह राशि तीन गुना ज्यादा है। हालांकि रक्षा पर खर्च में बढ़ोतरी चीन के लिए कोई नई बात नहीं है। यह लगातार सातवां साल है जब देश के डिफेंस बजट में वृद्धि की गई है। लेकिन इस बार खास बात यह है कि यह बढ़ोतरी विकास दर की सुस्त पड़ती रफ्तार के बीच प्रस्तावित की गई है। साल 2022 के लिए वहां जीडीपी में 5.5 फीसदी की वृद्धि का अनुमान है जो पिछले तीन दशकों में सबसे कम है। जाहिर है, 5.5 फीसदी जीडीपी ग्रोथ के बरक्स रक्षा खर्च में 7.1 फीसदी की बढ़ोतरी को चीन सरकार की प्राथमिकताओं का स्पष्ट संकेत माना जा सकता है। यह बढ़ोतरी ऐसे समय आई है जब चीनी सेना के आधुनिकीकरण का कार्यक्रम पहले ही जोर-शोर से जारी है। इसके तहत बड़े पैमाने पर पनडुब्बी, एयरक्राफ्ट कैरियर वगैरह बनाए जा रहे हैं।

सरकार के मुताबिक अब मिलिटरी ट्रेनिंग के जरिए कॉम्बैट प्रिपेयर्डनेस (युद्ध के लिए तैयार रहने की स्थिति) मजबूत करने पर ध्यान दिया जाएगा। इस संदर्भ में भारत की स्थिति देखें तो यहां न केवल रक्षा पर खर्च की तय की गई राशि एक तिहाई बैठती है बल्कि उस खर्च का भी बड़ा हिस्सा वेतन जैसे मदों में चला जाता है। आंकड़ों के मुताबिक भारत में बजट का 60 फीसदी हिस्सा कर्मचारियों पर खर्च होता है जबकि चीन में यह खर्च कुल रक्षा बजट का मात्र 30 प्रतिशत है। जाहिर है, आधुनिकीकरण कार्यक्रम पर खर्च की मात्रा वहां और बढ़ जाती है। मगर असल सवाल यह है कि रक्षा पर खर्च बढ़ाकर चीन संदेश क्या देना चाहता है? क्या इसका मतलब यह है कि ताइवान और हांगकांग से जुड़े मसलों पर, साउथ चाइना सी में और भारत से लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर उसकी आक्रामकता बढ़ने वाली है? खासकर लद्दाख में एलएसी पर जहां पिछले करीब दो साल से दोनों तरफ बड़ी संख्या में सैनिक तैनात हैं और 14 दौर की बातचीत के बाद भी तनाव में कमी की कोई सूरत नहीं बन पा रही, उसके रवैये में किस तरह का बदलाव आने वाला है? इस सवाल का जवाब समय के गर्भ में है, लेकिन उम्मीद की जानी चाहिए कि रक्षा तैयारियों का दीर्घकालिक अजेंडा इन संवेदनशील मसलों पर सहमति बनाने की राह में आड़े नहीं आएगा।

## दिव्य शक्तियां

धर्म-दर्शन

**अशोक वोहरा।**

विश्वभर में काठगढ़ महादेव का शिवलिंग अद्भुत, अलौकिक व विश्व की दिव्य शक्तियों का केन्द्रीय स्थल है। इस शिवलिंग के दो भाग हैं जो एक साथ है। एक शिव व दूसरा शाक्ति माता पार्वती का प्रतीक है । इस दिव्य स्थल पर पहुंचते ही दिव्य शक्तियों का अनुभूति होने लगती है। काठगढ़ शिवशक्ति शिवलिंग लिंग के दर्शन करते ही बरवस मन शिव भक्ति में रमने लगता है। शिव भगतजनो के लिए यह स्थल साक्षात् शिवशक्ति का प्रत्यक्ष दर्शन व अनुभूति का ध्यान स्थल है। चाहे राजा हो या रंक जो भी इनके साक्षात दर्शन करने आते हैं शिवशक्ति उन्हें अपने शरण में ले लेती है। काठगढ़ शिवशक्ति शिव लिंग के दर्शन मात्र से तीनों जन्मों के पापों का नाश हो जाता है। भोलेभंडारी सभी सांसारिक दैविक भौतिक दैहिक संतापो का नाश कर देते हैं ।

## संपादकीय

### संस्थागत उपाय

गबन और धोखे के ऐसे तमाम मामलों को देखते हुए खुदरा निवेशकों की हिफाजत के लिए ठोस पहल जरूरी है। निवेशकों की जागरूकता और उनकी सुरक्षा के लिए संस्थागत उपायों का दायरा और तंत्र फिलहाल खासा कमजोर है। हमें बुनियादी तौर पर आधुनिक बैंकिंग ढांचे की जरूरत है, जो इस तरह के धोखों को रोकने में कारगर हो।दिलचस्प है कि जिन लोगों ने सेवानिवृत्ति के लिए सरकार पर भरोसा रखा है, असुरक्षा वे भी महसूस कर रहे हैं। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) खातों से अवैध धन निकासी के मामले पिछले एक साल से खासा बढ़ गए हैं। इस बाबत आई रिपोर्ट दिखाती है कि कैसे ईपीएफओ कर्मचारियों ने फर्जी दस्तावेज और मोबाइल नंबरों के जरिए बंद कंपनियों से कथित तौर पर पैसे निकाले हैं। सीबीआई ने ऐसे मामलों में 18.97 करोड़ रुपये के घोटाले के आरोप में ईपीएफओ के 18 अधिकारियों को पकड़ा है। जाहिर है, ईपीएफओ के कामकाज में पारदर्शिता लाने और कर्मचारियों की हित रक्षा के लिए इसे संस्थागत तौर पर सुदृढ़ बनाने की जरूरत है। खुदरा निवेशकों को सुरक्षा की आवश्यकता है और राज्य को इसे प्राथमिकता के साथ मुहैया कराना चाहिए।

**नई फर्म आदर्श रूप से आईपीओ के जरिए खुदरा निवेशकों को मोटी कमाई की पेशकश करती हैं। पर ऐसी फर्म अब सार्वजनिक निर्गम के अधिक मूल्य निर्धारण के लिए कुख्यात हैं।**

# पेटीएम का मामला

वरुण गांधी।।

भारत में खुदरा निवेशकों ने पिछले तीन हफ्तों में 15 लाख करोड़ रुपये एक झटके में गंवा दिए। इस नुकसान की वजह कमोडिटी की कीमतों में वृद्धि, सुस्त अर्थव्यवस्था और यूक्रेन संकट है। इन निवेशकों में कई ने पहली बार बाजार में अपनी बचत को उत्साह के साथ लगाया था पर उन्हें निराशा हाथ लगी। साथ ही यह भी दिखा कि देश में खासतौर पर खुदरा निवेशकों के बीच बाजार की अस्थिरता को लेकर समझ कम है। सामाजिक सुरक्षा की कमी जैसा मुद्दा तो खैर है ही। ऐसी सूरत में हमें देखना–समझना होगा कि हमारे युवा निवेशक कैसे निवेश करते हैं। इनमें से कई अपनी बचत को म्युचुअल फंड और इक्विटी में लगाते हैं, जबकि अन्य आकर्षक बचत योजनाओं का रुख करते हैं जिनमें धोखाधड़ी की आशंका रहती है।

इक्विटी को ही लें तो इस दौरान सूचीबद्ध शीर्ष कॉरपोरेट ने भी अपनी चमक गंवाई है। नई फर्म आदर्श रूप से आईपीओ के जरिए खुदरा निवेशकों को मोटी कमाई की पेशकश करती हैं। पर ऐसी फर्म अब सार्वजनिक निर्गम के अधिक मूल्य निर्धारण के लिए कुख्यात हैं। इनमें पेटीएम (वन97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड) का मामला तो खासा चर्चित रहा। इसके शेयर की कीमत लगातार गिर रही है, जो आईपीओ मूल्य से

काफी कम है। इस बीच, बाजार को लेकर दिखे उत्साह ने कॉरपोरेट गवर्नेंस की चुनौतियों को खासतौर पर छिपाया है। एनएसई में देखी गई अनियमितताओं (गैर–प्रासंगिक व्यक्ति से व्यापार योजना, बोर्ड मीटिंग अजेंडा जैसे अहम मामलों पर एनएसई के पूर्व प्रमुख का ईमेल के जरिए इनपुट लेना) ने एक गहरी संस्थागत सड़ांध को उजागर किया है। इस दौरान, सेबी ने अपने पहले के अनिवार्य रुख को वापस लिया है, जिसमें शीर्ष 500 सूचीबद्ध फर्मों में अध्यक्ष और एमडी की भूमिका को अलग करने की बात कही गई थी। देश की शीर्ष 500 फर्मों में से 300 प्रमोटर–संचालित हैं। हालिया एबीजे शिपयार्ड घोटाले में 28 बैंकों के 22,842 करोड़ रुपये के कर्ज का डूबना दिखाता है कि बैंकिंग एनपीए का संकट गहराता जा रहा है। सूचीबद्ध फर्मों से इस्तीफा देने वाले स्वतंत्र निदेशकों की बढ़ी संख्या दिखाती है कि कई फर्में धोखाधड़ी में लिप्त हैं। इस बीच क्रिप्टो–मुद्रा ने नई चुनौती पेश की है। बिटकनेक्ट के संस्थापक सतीश कुंभाणी 2.4 बिलियन डॉलर की वैश्विक पोंजी योजना को व्यवस्थित करने के बाद और न्यूयॉर्क में संयुक्त राज्य जूरी द्वारा आरोपी ठहराए जाने के बाद भारत से भाग गए। अगस्त, 2017 से नोएडा में 15,000 करोड़ रुपये का बाइक बॉट घोटाला हुआ। इसमें उत्तर प्रदेश के निवासी संजय भाटी ने एक साधारण योजना के माध्यम से 2,00,000 से अधिक निवेशकों के साथ 15,000 करोड़ रुपये से अधिक का धोखा किया।

कहने को तो देश में आम भारतीय निवेशकों को धोखाधड़ी से बचाने के लिए नियामकीय ढांचा है, पर यह निष्प्रभावी है। मौजूदा सूरतेहाल में निवेशक जागरूकता में सुधार करने और चिटफंड योजनाओं की समीक्षा करने के लिए एक संस्थागत प्रणाली विकसित करने की दरकार है। इस तरह की प्रणाली आदर्श रूप से योजना को पहले से सत्यापित करेगी और भुगतान एकत्र करने के लिए एक मध्यस्थ मंच के रूप में काम करेगी। हमें आम भारतीय के लिए भी यह सत्यापित करने के लिए एक तंत्र की आवश्यकता है कि कोई योजना उनके लिए युक्तिसंगत है कि नहीं। आधार, यूपीआई और जीएसटी के बीच एकीकरण ऐसी प्रणाली को पुख्ता करने में मदद कर सकता है।

### सूडोकु नवताल-5323

सरल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | | 6 | | 3 | | 4 | | 8 |
| | 2 | | | | 9 | | 7 | |
| 4 | | | 1 | 6 | | | | 2 |
| | | 8 | | | 2 | | 3 | |
| 1 | | 4 | | | | 2 | | 5 |
| | 3 | | 5 | | | 8 | | |
| 7 | | | | 9 | 5 | | | 3 |
| | 8 | | 6 | | | | 4 | |
| 6 | | 2 | | 7 | | 5 | | 1 |

**सूडोकु नवताल -5322 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 6 | 5 | 1 | 8 | 2 | 7 | 4 | 9 |
| 7 | 9 | 2 | 3 | 5 | 4 | 1 | 8 | 6 |
| 4 | 1 | 8 | 6 | 7 | 9 | 5 | 3 | 2 |
| 6 | 5 | 9 | 2 | 4 | 8 | 3 | 7 | 1 |
| 8 | 4 | 7 | 9 | 3 | 1 | 6 | 2 | 5 |
| 1 | 2 | 3 | 5 | 6 | 7 | 4 | 9 | 8 |
| 2 | 7 | 6 | 4 | 9 | 5 | 8 | 1 | 3 |
| 5 | 8 | 1 | 7 | 2 | 3 | 9 | 6 | 4 |
| 9 | 3 | 4 | 8 | 1 | 6 | 2 | 5 | 7 |

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

### अपना ब्लॉग

## धोखाधड़ी के मामलों में वहां भी वृद्धि हुई

**मोहन।** अपना पैसा बैंक खातों में रखना पसंद करने वाले निवेशकों के लिए भी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। धोखाधड़ी के मामलों में वहां भी वृद्धि हुई है। आरबीआई का आंकड़ा है कि देश में अप्रैल 2021 से सितंबर 2021 के बीच 36,342 करोड़ रुपये के 4,071 बैंकिंग धोखाधड़ी के मामले सामने आए हैं। इनमें इंटरनेट और कार्ड से जुड़े लेनदेन के मामले 34.6 फीसद थे। 'धनी' ऐप के हालिया मामले को ही लें, जहां सैकड़ों भारतीयों के नाम पर बेहिसाब ऋण मिले। घोटालेबाजों ने ऋण की सुरक्षा के लिए पैन और आधार कार्ड के विवरण का उपयोग किया। इस समस्या के समाधान के लिए पीएसयू बैंकों को महत्वपूर्ण स्वायत्तता प्रदान करने और आरबीआई के सख्त केवाईसी मानदंडों को अनिवार्य करने की जरूरत है। यह भी कि हमें व्यावसायिक हितों वाले लोगों के बैंकों (सहकारिता सहित) के बोर्ड में शामिल होने पर सख्त प्रतिबंध लगाना चाहिए। इसके तहत एक साधारण बाइक के लिए 62,100 रुपए निवेश करने को उकसाया गया था।